भूमिका।

शिक्षित मण्डली को यह भली भाँति विदित है कि नाटक, उपन्यास आदि लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि उनसे लोगों का चरित्र संशोधित होकर समाज तथा देश का मंगल हो। परन्तु जितने काल में उपन्यास आदि एक प्रौढ़बुद्धि मननशील पाठक का चित्त अपनी ओर आकर्षण कर सकते हैं उतने वा उससे अल्पकाल में नाटक दर्शकसमाज की मनोवृत्ति अनायास तदाकार करने में समर्थ है। अतः मेरी अल्प बुद्धि में सम्प्रति औरों की अपेक्षा नाटक अधिकतर उपयोगी जान पड़ता है।

जातीयता वा जातीयएकता सामाजिक उन्नति का मुख्य द्वार है और उसका विपरीत शब्द भिन्नता वा वैमनस्य अधोगति का हेतु और उसका परमपोषक है। इन्हीं दो बातों पर लक्ष्य कर यह नाटक की पुस्तक लिखी गई है। इसका मूल आख्यान तुलसीकृत रामायण में आबाल वृद्ध वनिता सभी पढ़ते सुनते तथा जानते हैं। इसलिये इसका विशेष परिचय देना यहाँ अनावश्यक है तथा च यह भी कहना अनावश्यक प्रतीत होता है कि आमर्ष, वैरभाव, आलस्य, व्यर्थ की कल्पना आदि का क्या परिणाम होता है,